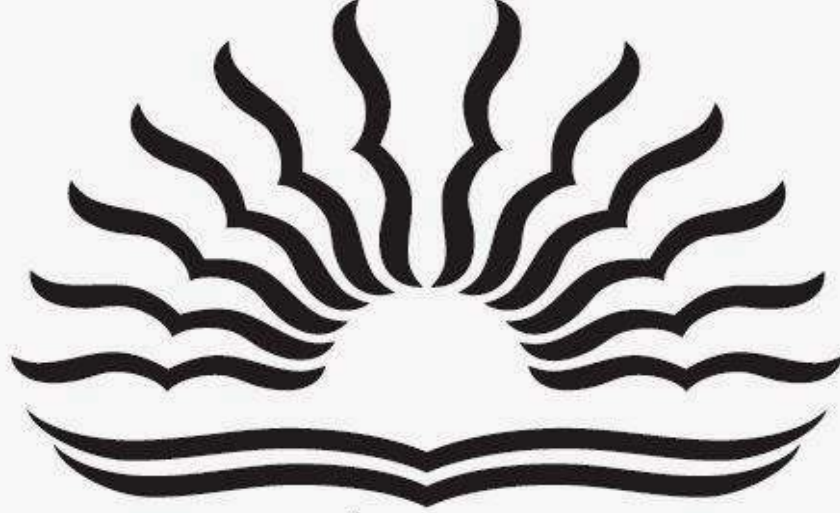


विद्यालय पत्रिका -2025-26

प्रतिबिम्ब



तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केंद्रीय विद्यालय क्रमांक -२ सोहना रोड, गुरुग्राम

GURUGRAM REGION/गुरुग्राम संभाग

अनुक्रमणिका

क्र. स.	विषय	पेज संख्या
1.	हमारे संरक्षक	3-4
2.	प्राचार्या संदेश	5
3.	मुख्याध्यापिका संदेश	6
4.	संपादक समूह	7
5.	संपादक की कलम से	8-9
6.	शिक्षक की कलम से	9-12
7.	नन्हे-मुन्ने सितारे	13-21
8.	विद्यालय प्रबंधन समिति	22-24
9.	हिंदी खंड	25-37
10.	वार्षिक निरीक्षण	38-40
11.	शिक्षक दिवस	41-42
12.	अलंकरण समारोह	43-45
13.	भारत स्काउट एंड गाइड की गतिविधियाँ	46-47
14.	अंग्रेजी खंड	48-61
15.	संस्कृत खंड	62-73
16.	भारतीय भाषा ग्रीष्मकालीन शिविर	74-75
17.	योग दिवस	76-78
18.	खेल दिवस	79-82
19.	स्वतंत्रता दिवस	83-85
20.	गणतंत्र दिवस	86
21.	एक भारत श्रेष्ठ भारत	87-91
22.	विज्ञान प्रदर्शनी	92
23.	विभिन्न गतिविधिया	93-99

हमारे संरक्षक



श्री वरुण मित्रा (उपायुक्त गुरुग्राम संभाग केंद्रीय विद्यालय संगठन)



सह-आयुक्त- श्री रणधीर सिंह
गुरुग्राम संभाग



सह-आयुक्त- श्री दीदार सिंह
गुरुग्राम संभाग



सह- आयुक्त - श्री भूपेश भट्ट
गुरुग्राम संभाग



प्राचार्या अंजना गंगवार (के. वि. सोहना रोड ,गुरुग्राम)



प्राचार्या की कलम से

प्रिय विद्यार्थियों, सम्मानित शिक्षकगण एवं अभिभावकगण

शैक्षणिक सत्र 2025-26 हेतु विद्यालय पत्रिका प्रतिबिम्ब को प्रकाशित किया जाना केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-2 सोहना रोड के लिए हर्ष एवं गर्व का विषय है। विद्यालय पत्रिका विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, विद्यालय में आयोजित गतिविधियों तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु किए जाने वाले प्रयासों की एक झलक होती है। एक पंक्ति में कहें तो विद्यालय पत्रिका विद्यालय का दर्पण होती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के पश्चात् विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं जिनमें सृजनात्मक एवं आलोचनात्मक समझ, बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मकता, कौशल शिक्षा आदि प्रमुख परिवर्तन हैं। समय की माँग के अनुसार विद्यार्थियों को विश्व समुदाय के लिए सुयोग्य नागरिक बनाने हेतु शिक्षण प्रविधियों में आवश्यक परिवर्तन केन्द्रीय विद्यालयों में किए गए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के पश्चात् विद्यार्थियों में आए सकारात्मक परिवर्तनों की झलक भी विद्यालय पत्रिका में आभासित हो रही है।

विद्यालय पत्रिका में विद्यार्थी वर्ग की रचना को संकलित कर सभी हितधारकों के करकमलों में समर्पित करने वाले विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा सम्पादक मण्डली को साधुवाद देते हुए असीम बधाइयाँ देती हूँ तथा अपेक्षा करती हूँ कि शिक्षा की आभा से जगत् को आलोकित करने के पुनीत कार्य में हम अपना अप्रतिम योगदान अनवरत जारी रखेंगे।

(प्राचार्या)

श्रीमती अंजना गंगवार

केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-2 सोहना रोड, गुरूग्राम



मुख्याध्यापिका संदेश

प्रिय विद्यार्थियों, सम्मानित शिक्षकगण एवं अभिभावकगण

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना ही नहीं, बल्कि अच्छे संस्कार और मजबूत चरित्र का निर्माण करना भी है।"

विद्यालय वह स्थान है जहाँ बच्चों के सर्वांगीण विकास की नींव रखी जाती है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल शैक्षणिक उपलब्धियाँ प्राप्त करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, अनुशासन, आत्मविश्वास और जिम्मेदारी की भावना का विकास करना है।

हमारे विद्यालय में शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावी, रोचक और सार्थक बनाने के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों, गतिविधियों, शिक्षण सामग्री तथा तकनीकी साधनों का उपयोग किया जाता है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को सीखने का अवसर ही नहीं, बल्कि अपनी प्रतिभा को पहचानने और उसे निखारने का भी अवसर मिलता है।

विद्यालय में आयोजित विभिन्न सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम, जागरूकता अभियान, खेलकूद तथा रचनात्मक गतिविधियाँ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में सहयोग, नेतृत्व, संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुण विकसित होते हैं।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि विद्यालय की यह पत्रिका वर्ष भर में आयोजित विभिन्न गतिविधियों, उपलब्धियों और विद्यार्थियों की रचनात्मक अभिव्यक्तियों की एक सुंदर झलक प्रस्तुत कर रही है। यह पत्रिका हमारे विद्यार्थियों की प्रतिभा, परिश्रम और शिक्षकों के समर्पण का प्रतीक है।

अंत में, मैं विद्यालय परिवार के सभी शिक्षकों, विद्यार्थियों और अभिभावकों का उनके निरंतर सहयोग, समर्पण और प्रयासों के लिए हार्दिक धन्यवाद करती हूँ।

धन्यवाद।

(प्रधानाध्यापिका)

श्रीमती अनिता

केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-2 सोहना रोड, गुरूग्राम

सम्पादकीय समूह (Editorial Group)

शिक्षक समूह

श्री रणबीर (प्र. स्ना संस्कृत)

श्रीमती सरिता(प्र. स्ना. .शि .अंग्रेजी)

श्रीमती प्रेरणा(प्र. स्ना. .शि .अंग्रेजी)

श्रीमती ललिता(प्र.स्ना.शि.)हिंदी

कुमारी सोनू (प्र.स्ना.शि.)हिंदी

श्रीमती नीतू रानी(प्राथमिक शिक्षिका)

श्री अरुण कुमार (प्राथमिक शिक्षक)

श्री रुपेश (प्राथमिक शिक्षक)

श्रीमती नेहा(कंप्यूटर इंस्ट्रू.)

संपादक की कलम से



प्रिय पाठकों,

हमारी विद्यालय पत्रिका का यह नया अंक आपके सामने प्रस्तुत करते हुए हमें अपार खुशी हो रही है। यह केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि हमारे विद्यालय परिवार की मेहनत, सृजनशीलता और सपनों की कहानी है।

नवभारत के सपने देखे, पूर्ण करेंगे जिनको बच्चे।

यीशु, ईशा, अल्लाह यही है, बच्चे बिल्कुल मन के सच्चे।।

देश समाज की रौनक इनसे, इनसे ही महकेगा भारत।

कलाम, नरेंद्र, सुखदेव इन्हीं में, इनमें ही छिपे है बुद्धि विशारद।।

हर सोच, प्रत्येक समझ दुनिया को एक नये अंदाज़ से देखती है। अगर वह सोच, वह समझ भावी पीढ़ी की हो तो अभिव्यक्ति की ताज़गी और नएपन का अहसास करा देती है। बँधी बँधाई नियमित लीक से हटकर बच्चा कुछ नया रचनात्मक सोचता है और नए समाज के निर्माण में भागीदार बनता है।

हम जब भी बच्चों से वार्तालाप करते हैं, उनसे उनके मन के विचार जानते हैं तो सहज़, निश्चल उनके विचारों, भावों और अभिव्यक्तियों को सुनकर ताज़गी का अनुभव करते हैं।

जैसे निराला जी ने कविता के बंधे-बंधाए नियमों को तोड़कर मुक्त छंद कविता का निर्माण किया और भावों के सहज़ प्रवाह को प्रधानता दी क्यों न उसी तरह हम भी बच्चों को उनके भाव सहजता से लिखने की स्वतंत्रता दें।

“एक बार जब लेखन में प्रवाह आ जाता है तो व्याकरणिक अशुद्धियाँ भी समय के साथ लुप्त हो ही जाती हैं”।

इस विचार रूपी बीज को अंकुरित करने के लिए हमारे द्वारा एक कार्यशाला का आयोजन किया गया और बच्चों को अपने भाव, विचार, कहानी, कविता, लेख आदि के माध्यम से अभिव्यक्त करने के लिए बोला गया। उन्हीं भावों, विचारों, अभिव्यक्तियों को बिना माँझे, बिना तरासे उसी अनगढ़ स्वरूप में संकलित कर पत्रिका का निर्माण किया जा रहा है।

उम्मीद है आप इन प्यारे प्यारे बच्चों के मासूम भावों के पीछे छिपे हुए रचनाकार को पहचान पाएंगे।

इसके साथ ही सत्र के दौरान बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए समय समय पर आयोजित पाठ्य सहगामी क्रियाओं का विवरण भी साँझा किया जा रहा है, जो पाठक को रोमांचित करने में सफल रहेगा। विद्यालय पत्रिका द्वारा साहित्यिक रूचि

का भी पता चलता है। इस प्रकार क़ी विविधता पत्रिका को छात्रों क़ी रचनात्मक और बौद्धिक क्षमताओं का एक सम्पूर्ण प्रतिबिम्ब बनाती है।

प्राचार्या श्रीमती अंजना गंगवार जी का मार्गदर्शन मुझे संबल प्रदान करता रहता है। सभी शिक्षक/शिक्षिका / विद्यार्थियों और अन्य सहयोगियों का भी हार्दिक आभार जिन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में इस ई - पत्रिका के प्रकाशन में हमारा सहयोग किया।।

आशा करते है हमारा यह छोटा सा प्रयास आपको प्रेरित करेगा,और सोचने पर मज़बूर करेगा।आपके सुझाव और स्नेह ही हमारी सबसे बड़ी प्रेरणा है।।

सप्रेम

सम्पादक

कुमारी सोनू(प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका ,हिंदी)
विद्यालय पत्रिका समिति

जो जीवन की धूल चाट कर बड़ा हुआ है

जो जीवन की धूल चाट कर बड़ा हुआ है।

तूफ़ानों से लड़ा और फिर खड़ा हुआ है।

जिसने सोने को खोदा लोहा मोड़ा है।

जो रवि के रथ का घोड़ा है।

वह जन मारे नहीं मरेगा,

नहीं मरेगा।

जो जीवन की आग जला कर आग बना है।

फ़ौलादी पंजे फैलाए नाग बना है।

जिसने शोषण को तोड़ा शासन मोड़ा है।

जो युग के रथ का घोड़ा है।

वह जन मारे नहीं मरेगा,

नहीं मरेगा।

श्रीमती ललिता
प्र.स्ना.शि.(हिंदी)

ताने - बाने

जो ये सांसों के ताने - बाने हैं,

ऊपर वाला ही जाने हैं।

बैठा हूँ आज मैं लिखने फिर से,

कुछ राज उन्हें बतलाने हैं।

मुझे बतलाता जज्बात सभी तू

रहकर चुप करता बात कभी तू।

बिखरे पन्ने ,कुछ रंग चटक से

सब लगे मुझे समझाने है।

सब लूंगा सीख मैं धीरे-धीरे,

दिन बचपन के अभी सुहाने है।

जो ये सांसों के ताने - बाने है,

ऊपर वाला ही जाने है।

नन्ही- सी एक मुस्कान तेरी,

देती दिल पर जब दस्तक है।

उड़ना मैं सिखा दूँ खुले गगन में,
प्रयास मेरा ये भरसक है ।
चल उंगली पकड़ कर निकल चले अब,
कुछ बना घरोंदे मिटाने हैं,
ये जो सांसों के ताने - बाने है
ऊपर वाला ही जाने है ।

लेखक:- रूपेश
प्राथमिक शिक्षक
के. वि. न.2 सोहना रोड गुरुग्राम

नींव की ईंट



उस खूबसूरत कंगूरे को देख तारीफ दुनिया ने की,
वाह!क्या खूब कारीगरी है।
क्या वाक्किफ है ये मंजुल किस पर खड़ी है,
नींव की वह ईंट जो न जाने कितने गज नीचे गढ़ी है।
कंगूरे की लालिम के आगे वह कहीं दिखती नहीं,
थामे है पूरी ताकत से वह उस इमारत को
जो धरती के हिलने पर भी डिगती नहीं।
यही यथार्थ है, इस स्वार्थी जगत का दूसरों के त्याग ,उद्यम की कोई कीमत नहीं।
किसी को दिल से सराहें ऐसी यहां सीरत नहीं ,
सागर भी फेक देता है किनारे पर उसको,
जो कभी उसके लिए अमूलक था।

मासूम कबूतर को शिकारी बाज़ बना दिया हालात ने

वह लड़ा उसके लिए जो उसका हक था।

लेखनी, मेरी कलम से

कुमारी सोनू

(प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका)

युवा पीढ़ी एवं नैतिक शिक्षा

भारत की युवा पीढ़ी में नैतिक शिक्षा के अभाव के कई कारण हैं, जो उसके व्यवहार, सोच और समाज पर गहरा प्रभाव डालते हैं। इसका समाधान और दुष्परिणाम समझना आज के समय में अत्यंत आवश्यक है।

नैतिक शिक्षा के अभाव के कारण भारतीय जन युवा पीढ़ी में नैतिक मूल्यों के पतन के पीछे कई कारण जिम्मेदार हैं। पारिवारिक और सामाजिक परिवेश में नैतिकता का अभाव, विशेषकर जब माता-पिता, शिक्षक या वरिष्ठ अनैतिक आचरण प्रस्तुत करते हैं, जिससे बच्चे वही सीखने लगते हैं।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता, बल्कि व्यावसायिक/आर्थिक सफलता को ही प्राथमिकता दी जाती है।

भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की उपेक्षा और पाश्चात्य जीवनशैली का अंधानुकरण भी युवाओं को भौतिकतावादी बना रहा है। सोशल मीडिया का दुरुपयोग, जिससे तेजी से गलत आदतें फैलती हैं और बच्चों के संस्कारों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

परिवार में कलह, अनुशासनहीनता और कुसंगति, जिससे बच्चों का चरित्र निर्माण सही ढंग से नहीं हो पाता।

नैतिक शिक्षा के अभाव के दुष्परिणाम

युवाओं में नैतिक मूल्यहीनता के नुकसान समाज और राष्ट्र के स्तर पर महसूस किए जा सकते हैं।

अच्छे-बुरे का भेद मिट जाता है, जिससे भ्रष्टाचार, अपराध, हिंसा, नशाखोरी जैसे कृत्य बढ़ते हैं।

सामाजिक सद्भाव, विश्वास, सहयोग की भावना घटती जाती है, जिससे समाज में तनाव, असंतोष और असुरक्षा बढ़ती है।

युवा पीढ़ी अपने कर्तव्य, परिवार, देश, संस्कृति से विमुख हो जाती है, जिसका परिणाम राष्ट्रीय प्रगति में बाधा बनता है।

मनोवैज्ञानिक समस्याएं जैसे डिप्रेशन, हाइपरटेंशन, अवसाद आदि जल्दी आने लगती हैं।

आज के दिन समाज में अपना काम बनता भाड़ में जाए जनता की रीति का ज्यादा पालन किया जाता है जो समाज के लिए बहुत हानिकारक है।

समाधान

युवा पीढ़ी में नैतिक शिक्षा को पुनः स्थापित करने के लिए निम्न उपाय किए जा सकते हैं।

विद्यालयों के पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा को अनिवार्य करके विद्यार्थियों की चरित्र निर्माण की ओर ध्यान देना चाहिये; नैतिक कथाएँ, ऐतिहासिक महापुरुषों के चरित्र, व्यवहार-आधारित पाठ्यक्रम से बच्चों के आचरण को संवारा जा सकता है।

बच्चों के सामने अभिभावकों का व्यवहार बहुत महत्वपूर्ण होता है, इसके लिए हर माता-पिता को सजग रहना चाहिए।

परिवार के हर स्तर पर अनुशासन, भलाई, ईमानदारी का व्यवहार करना चाहिए ताकि बच्चे उसी को अपना आदर्श मान सकें।

बच्चों पर आपके आस-पड़ोस का बहुत ज्यादा प्रभाव होता है इसलिए अभिभावकों को इस पर ध्यान देना चाहिए।

अभिभावकों को सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों में बच्चों को हिस्सा दिलाना चाहिए, जिससे वे भारतीय संस्कृति, परंपराओं और नैतिक मूल्यों से परिचित हो सकें।

योग, ध्यान, साहित्य एवं आध्यात्मिक अध्ययन को शिक्षा के साथ जोड़ना चाहिए।

सोशल मीडिया और बाह्य प्रभावों के प्रति जागरूकता लाते हुए कठोर नियमों का पालन कराना जरूरी है।

निष्कर्ष :- नैतिक शिक्षा के अभाव से उत्पन्न समस्याओं का समाधान सभी स्तरों—परिवार, विद्यालय, समाज—पर संभव है। यदि बच्चों और युवाओं को सही मार्गदर्शन, शिक्षा और आदर्श मिलें, तो वे अपने भीतर नैतिकता, विवेक और उत्तरदायित्व की भावना विकसित कर सकते हैं, जिससे एक स्वस्थ, सशक्त और प्रगतिशील राष्ट्र का निर्माण हो सकता है।

रणबीर सिंह

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि "

"उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः" इति नीतिवचनम् मनुष्यजीवनस्य अत्यन्तं प्रेरणास्पदं मार्गदर्शनं च प्रदर्शयति। अस्य वाक्यस्य सारः एषः यत् केवलं इच्छा वा कामना न कस्यचित् कार्यस्य सिद्धिं ददाति, किन्तु तस्य साधनार्थं कर्मपरायणता, प्रयत्नः, धैर्यं च अपेक्षितम्। यथा बीजं भूमौ विन्यस्य जलसिंचनं विनैव न अंकुरति, तथैव जीवनस्य शुभफलमपि केवलं चिन्तनाद् न लभ्यते। उद्यमः एव मानवानां उन्नतेः मूलं कारणम् अस्ति।

भारतीयसंस्कृतौ कर्मप्रधानता सर्वदा प्रतिपादिता। गीता अपि कथयति—"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"—इति, यत्र प्रयत्नस्य तथा कर्तव्यनिष्ठायाः महत्त्वं प्रतिपन्नं। यः पुरुषः नित्यं कर्मण युक्तः, स एव जीवनस्य सर्वसौभाग्यं प्राप्नोति। मनोरथाः अपि प्रयत्नरहिताः केवलं कालव्ययाय भवन्ति। यथा नाविकः महासागरे नौका-चालनं विना पारं न गच्छेत्, तथैव प्रयत्नं विना पुरुषार्थः न सुलभः।

उद्यमस्य स्वरूपं केवलं शारीरिकं श्रमं नास्ति, अपि तु मानसिकबलं, धैर्यं, तथा स्थैर्यम् अपि तत्रावश्यकम्। प्रारब्धविरोधेऽपि यस्य मनसि निश्चयो दृढः भवति स एव यशसः पात्रं भवति। इतिहासे अपि बहवः महापुरुषाः दृष्टाः ये कठिनतमावस्थायाम् अपि स्वस्य उद्देश्ये निश्चलतां धारयित्वा विजयशिखरं प्राप्तवन्तः।

श्रीरामः, श्रीकृष्णः, अर्जुनः, चाणक्यः, स्वामीविवेकानन्दः—एते सर्वे उद्यमस्य जीवन्तं प्रतीकं सन्ति। उद्यमेन एव जीवनं सार्थकं भवति। निरुद्यमः मनुष्यः जडवत्, निष्फलः च दृश्यते। प्रयत्नशीलः तु आत्मविश्वासेन पूर्णः, सदा आग्रहमन्, असम्भवमपि सम्भवतीति निश्चिनोति।

लोकोक्त्येषा प्रसिद्धा—"परिश्रमविनं दैवं न सहायं करोति"—अर्थात् देवताः अपि तं जनं सहायं कुर्वन्ति, यो आत्मप्रयत्नं करोति। अतः उद्यमेन एव कार्याणि साध्यन्ते, न तु आलस्येन। सर्वे मनुष्याः स्वजीवने एतं सिद्धान्तं हृदि स्थापयित्वा प्रयत्नशीलतां वपन्तु। यः बालः अध्ययने, कृषकः कृषौ, व्यापारी विक्रये, लेखकः लेखने, सर्वत्रैव यः उत्साहपूर्वकं कर्म करोति स एव समाजे सम्मानं लाभते। आलस्यं नाशाय, उद्यमः निर्माणाय। अतः अस्य नीतिवचनस्य सार्थकता सर्वदा वर्तमानम्। उद्यमं विना जीवनं नीरसं, प्रयत्नेन तु समग्रं जीवनं प्रकाशमयं भवति। तस्मात् सर्वदा स्मर्तव्यम्—"उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि नो मनोरथैः।"

रणबीर सिंहः

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक

नन्हे-मुन्हे सितारे



विद्या प्रवेश





स्काउट एंड गाइड्स





Know Your Garden- एक मनोरंजक और शैक्षिक गतिविधि है जो बच्चों और वयस्कों को प्रकृति से जोड़ती है।





प्राचार्या महोदया, विद्यार्थियों का उत्साह वर्धन करते हुए तथा विभिन्न खेल क्रियाओं में विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए-







विद्यालय प्रबंधन समिति की बैठक

विद्यालय प्रबंधन समिति (एसएमसी) का मुख्य उद्देश्य, स्कूल के प्रबंधन में सहायता करना और स्कूल के समग्र प्रदर्शन में सुधार करना होता है। इसके अलावा, समिति का मकसद होता है कि स्कूल अपने छात्रों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा दे सके।







हिंदी खंड

सपनों की उड़ान

सपनों की दुनिया कितनी प्यारी,
लाती खुशियाँ ढेर हमारी।
मन में जो ठान लिया,
मेहनत से सब मान लिया।
छोटे-छोटे सपने मेरे,
बड़े बने जब दिल से घेरे।
सपनों को सच करना है,
रास्ता खुद गढ़ना है।
हार नहीं मानूँगा मैं,
डर से नहीं थमूँगा मैं।
सपनों की उड़ान निराली,
ले जाएगी ऊँचाई पार खाली।

अमृता कुमारी
6th A

गुड़िया

मेले से लाया हूँ इसको
छोटी सी प्यारी सी गुड़िया,
बेच रही थी इसे भीड़ में
बैठी नुक्कड़ पर बुढ़िया।
मोल भाव करके लाया हूँ
थोक – बजाकर देख लिया,
आंखें खोल मूंद सकती है
वह कहती है पिया -पिया।

जड़ी सितारों से है इसकी
चुनरी लाल रंग वाली,
बड़ी भली हैं इसकी आंखें
मतवाली काली – काली।
ऊपर से है बड़ी सलोनी
अंदर रुई है तो क्या?
ओ गुड़िया तू इस पल मेरे
शिशुमन पर विजई माया
सीरत
6 ब

पानी बचाओ

हमें पानी बचाना होगा जैसे
जैसे ये बादल बचा के रखता है पानी आसमान में।
जैसे एक रोजा रखने वाला बचाता है पानी रमजान में।
जैसे एक ऊंट रेगिस्तान में बचाता है पानी अपने पेट में।
जैसे नदी बचाती है पानी एक वैशाख और जेठ में।
जैसे एक माली बचाता है पानी फुलवारी के लिए।
जैसे एक किसान बचाता है पानी अपनी फसल के लिए।
जैसे एक पानिहारिन बचाती है पानी घड़ा भरते हुए।
जैसे एक पिता बचा लेता है आंख का पानी बेटी विदा
करते समय।

हिंदुस्तान और दुनिया के लोगों ना सोना ना चाँदी ना
बंगला ना गाडी छोड़ करके जाये। आपकी आने वाली
पीढ़ी कहीं प्यास से मर न जाये इतना पानी तो मेरे हुजूर
मेरे सरकार छोड़कर जाएं।

इमरान (आठवीं "अ")

हमारी पाठशाला

नन्ही सी एक बगिया है, यह हमारी पाठशाला है।

ज्ञान की है यह धारा, जहाँ मन हरदम बहता है।

कल की चिंता को छोड़, आज का कल बनाते हैं हम,

एक दूजे के संग-संग, मिलकर आगे बढ़ते हैं हम।

आओ मिलकर सीखें, आओ मिलकर गाएँ,

अपनी दुनिया को हम, खुशियों से भर जाएँ।

शब्दों की यह दुनिया है, गणित की यह माया है,

हर एक विषय में यहाँ, नया एक जीवन पाया है।

मेहनत की एक कहानी, यह हमारी पाठशाला है,

यह विद्या का मंदिर है, यह हमारा उजाला है।

नाम :- सत्यसंध

कक्षा :- 8 'अ'

रहस्यमई हवेली

एक गांव में राजू और मोहन नाम के दो लड़के रहते थे। वह दोनों एक दिन क्रिकेट खेल रहे थे कि तभी उनकी गेंद एक पुरानी हवेली में घुस जाती है। राजू उसे हवेली में जाने से मना कर देता है परंतु मोहन अपनी गेंद लेने के लिए उस हवेली में जाता है और आधे घंटे के बाद भी वापस नहीं आता। राजू डर जाता है और वापस अपने घर जाकर यह बात अपने मम्मी पापा को बताता है। उसके मम्मी पापा भी राजू के साथ उसे हवेली में जाते हैं और मोहन के मम्मी पापा को भी अपने साथ ले चलते हैं। जब वह सब हवेली पहुंचते हैं तो देखते हैं कि मोहन बेहोश होकर लेटा हुआ है। उन सब ने देखा की गेंद वही पड़ी हुई है। तभी अचानक दरवाजे अपने आप ही बंद हो जाते हैं। कुछ अजीब अजीब सी आवाजे आने लगते हैं। सब लोग तो जाते हैं, और आवाज किस चीज की है यह पता लगाने के लिए वह आवास की दिशा में जाते हैं, तभी उनको सीढ़ियां दिखती है। वह सब ऊपर जाते हैं तो

देखते हैं कि वहां पर एक आदमी की फोटो लगी हुई है। फोटो के नीचे एक नाम लिखा हुआ है :- रमेश। सब लोग यह नाम पढ़कर डर जाते हैं क्योंकि रमेश उसे गांव का जाना माना खूनी था, और अब वह नहीं रहा था। उसे फोटो के नीचे एक बंदूक भी थी। और पीछे वाले कमरे से बहुत बदबू आ रही थी। जब वह सब पीछे वाले कमरे में गए तो उन्होंने देखा की रमेश का शरीर वही पड़ा हुआ है। तभी उनको आवाज सुनाई देती है कि यहां से चले जाओ वरना अच्छा नहीं होगा। सब डर जाते हैं और नीचे भागते हैं मोहन को उठाकर जैसे ही वह बाहर जाने की कोशिश करते हैं दरवाजा खुलता ही नहीं है। वह सब खिड़की से भागने की कोशिश करते हैं परंतु खिड़कियां भी नहीं खुलती हैं। वह सब सोचते हैं कि ऊपर जाकर कोई भागने का रास्ता खोजते है। पर ऊपर भी उन्हें कोई रास्ता नहीं मिलता अब वह सब इस घर में फंस चुके थे। तभी धीरे-धीरे मोहन को होश आने लगता है। मोहन के होश में आने पर सब लोग उससे पूछते हैं कि क्या हुआ था। मोहन बताता है कि वह गेंद लेने इस घर में आया था तभी दरवाजे बंद हो गए और वह खुल नहीं रहे थे तो मैंने खिड़कियों से भागने की कोशिश की परंतु वह भी नहीं खुली। तब मैंने ध्यान दिया कि घर की पीछे की तरफ भी एक दरवाजा है जो कि खुला हुआ था मैंने वहां से भागने की कोशिश की परंतु किसी ने मेरे सर पर किसी भारी चीज से बहुत जोरदार हमला किया जिससे मैं बेहोश हो गया। उसके बाद मुझे कुछ नहीं पता। सबने मोहन से पूछा कि वह दरवाजा कहां है? मोहन ने बताया कि सामने वाले दरवाजे के बिल्कुल पीछे ही वह दरवाजा है। सब लोग उसे दरवाजे से बाहर तो निकल आए परंतु वह यह घटना अभी भी नहीं भूल पा रहे थे तो उन्होंने एक तांत्रिक की मदद ली। तांत्रिक के साथ जब वह लोग उसे घर में गए तो तांत्रिक ने बताया कि इस घर में भूतिया साया है। तांत्रिक ने वहां पर एक यज्ञ किया उसके बाद से घर के हर कोने में गंगाजल छिड़क दिया, और कहां की अब यहां से भूतिया साया है चुका है। परंतु उसके बाद भी किसी ने उसे घर में घुसने की हिम्मत नहीं की। आज भी वह एक रहस्यमई हवेली ही है।

- अनिश उपाध्याय (आठवीं "अ")

नया सवेरा

रात के आँचल से झाँकी, एक किरण मुस्काई,
ठंडी हवा में उम्मीदों की खुशबू छाई।
पत्तों ने फुसफुसा कर कुछ बातें कहीं,।”
मन के कोने में सपनों का दीप जला,
थोड़ी हिम्मत, थोड़ा विश्वास साथ चला।
ज़िंदगी की राहें भले हों टेढ़ी-मेढ़ी,
हर मोड़ पर सीख है, हर ठोकर में नेकी।
चल पड़ो अब बिना डर के, आसमान छूने,
अपने सपनों को सच करने, रंग भरने।
नई सुबह है, नया सवेरा,
खुद पे भरोसा रखो — यही है सच्चा सवेरा।

नाम – अनुष्का
कक्षा – 8वीं 'अ'

माँ तुम कितनी अच्छी हो

कितना प्यार करती हो
मैं तुम्हें कितना सताती हूँ,
माँ, तुम कितनी अच्छी हो.....
कितनी प्यारी, भोली भली
खूबसूरत हो तुम
सबसे अच्छी, सबसे सुन्दर
मेरी मम्मी हो तुम।
माँ तुम दुर्गा का रूप
मेरी ज़िन्दगी में हो तुम सूर्य की धूप।
तुम हो बहुत महत्वपूर्ण

सबसे सर्वश्रेष्ठ है तुम्हारा रूप

माँ तुम कितनी अच्छी हो।

मिहिका राठौर (छठी "अ")

जीवन से लगाव

एक व्यक्ति भीख मांगकर अपना गुजारा करता था। उसका वृद्ध शरीर इतना जर्जर हो चुका था कि उसकी एक-एक हड्डी गिनी जा सकती थी। उसकी आंखों की ज्योति लगभग जा चुकी थी और शरीर में कुछ रोग हो गया था। एक युवक रोज उस भिखारी को देखता, उसे देखकर युवक के मन में घृणा और दया के भाव एक साथ उमड़ते थे। वह सोचता, इसके जीवन जीने का क्या फायदा? जीवन से इसे इतना लगाव क्यों है? ईश्वर इसे मुक्त क्यों नहीं कर देता। जब एक दिन उससे रहा नहीं गया, तो वह भिखारी के पास जाकर बोला बाबा तुम्हारी इतनी बुरी हालात है फिर भी तुम जीना चाहते हो और भीख मांगते हो। तुम ईश्वर से यह प्रार्थना क्यों नहीं करते की वह तुम्हें इस नारकीय जीवन से मुक्त कर दे। इस पर भिखारी कुछ देर तक मौन रहा, फिर बोला बेटा जो तुम कह रहे हो वही बात मेरे मन में भी उठती है। मैं ईश्वर से बार-बार यही प्रार्थना करता हूँ पर वह मेरी नहीं सुनता ही नहीं। शायद वह चाहता है कि मैं इसी धरती पर बना रहूँ ताकि दुनिया वाले मुझे देखे और समझे की एक दिन मैं उन्हीं की तरह था लेकिन ऐसा दिन कभी भी आ सकता है जब किसी कारणवश वे भी मेरी तरह हो जाएंगे इसलिए किसी को भी अपने ऊपर किसी भी तरह का अभिमान नहीं करना चाहिए। इंसान की ज़िंदगी में सब दिन हमेशा एक से नहीं रहते। युवक भिखारी के शब्दों में छिपी बात समझ गया। उस लगा की भिखारी ने उसकी आँखें खोल दी। इसके बाद जीवन भर उसने फिर किसी के जीवन को बिना सोचे-समझे समझने की गलती नहीं की।

नाम-शारिका
कक्षा – आठवीं 'अ'

क्या बरूँ मैं बड़ा होकर?

सब पूछते मुझसे,

“बेटा, बड़ा होकर क्या बनेगा?”

पापा कहते —

“मेरा सहारा बन, कारोबार सम्भालना।”

दादी बोलीं —

“देश की सेवा करना, फौज में अफ़सर बनना।”

नानू ने हौसला दिया —

“आसमान को छूना है, पायलट बन जाना।”

मम्मी मुस्कुराकर कहती हैं —

“अपने मन की सुनना,

सबसे बढ़कर एक अच्छा इंसान बनना।”

हार्दिक यादव
(छठी अ)

धरती बोली – बहुत दिन बाद,

अब तो मेरे आँचल भी भीगे।

गिरी जो पहली नन्ही बूंद,

खुशियों से भर गया हर कोना।।

मिट्टी की खुशबू छा गई चारों ओर,

जैसे खुला हो सुख का कोई द्वार।

मेंढक गाने लगे झील किनारे,

नदियां मुस्काई प्यारी प्यारी।।

कागज की नाव चल पड़ी, संग हवा,

हर मन में छा गया नया सपना।

हर दिल में आया मीठा सुकून,

आई बारिश की पहली बूंद।।

आहना

कक्षा – छठी “ब”

बारिश की पहली बूंद।



आसमान में घिर आए बादल,

लगी नाचने पेड़ों की पायल।

धीरे धीरे चली हवा सुहानी,

महका बाग़, महकी कहानी।।

वर्षा बहार

एक बार की बात बताऊं,

सुनो ध्यान से तुम्हें सुनाऊं।

बहुत अधिक गर्मी पड़ती थी,

बिन वर्षा धरती जलती थी।

बादल बाबा रूठ गए थे,

ताल तलैया सूख गए थे।

मोहन बोला एक काम करें,

सब बादल के पास चले।

पहाड़ों में वह बैठा है,

गुस्से से वह ऐठा है।

सब पहाड़ों पर पहुंच गए ,

आंखों से आंसू झलक गए।

बादल बाबा तुम क्यों बरस रहे?

पानी को हम तरस रहे

मोन तोड़कर बादल बोला,

गुस्से का तब कारण खोला ।

तुम पेड़ों को काट रहे हो,

धरती का कर नाश रहे हो।

पेड़ पौधे हैं मुझको प्यारे,

हाथ हिलाकर मुझे बुलाते।

जो तुम मुझे वर्षा चाहो,

और अधिक तुम पेड़ लगाओ।

बाबा हम हैं बहुत अभागे ,

सच कहते हैं तेरे आगे ।

पेड़ काटने की लाचारी ,

आबादी की है बीमारी।।

लाचारी का परम पा गया,

बाबा को तरस आ गया।

फिर बादल बाबा मुस्कराएं

धरती पर वर्षा कर खुशियां फैलाए

अंशु
सातवीं 'अ'

क्यों चिंता करें?

चिंता करने के सिर्फ दो ही कारण हैं — या तो आप सफल हैं या असफल।
अगर आप सफल हैं, तो चिंता करने की कोई बात नहीं।
अगर आप असफल हैं, तो चिंता करने के फिर दो ही कारण हैं —

आपका स्वास्थ्य अच्छा है या आप बीमार हैं।

अगर आपका स्वास्थ्य अच्छा है, तो चिंता की कोई बात नहीं।
अगर आप बीमार हैं, तो चिंता करने के फिर दो ही कारण हैं —
आप या तो ठीक हो जाएंगे या मर जाएंगे।

अगर आप ठीक हो जाएंगे, तो चिंता की कोई बात नहीं।
अगर आप मर जाएंगे, तो चिंता करने के फिर दो ही कारण हैं —
आप या तो स्वर्ग जाएंगे या नरक।

अगर आप स्वर्ग जाएंगे, तो चिंता की कोई बात नहीं।
अगर आप नरक जाएंगे, तो आप अपने पुराने दोस्तों से हाथ मिलाने में इतने व्यस्त होंगे कि आपको चिंता करने का समय ही नहीं मिलेगा।

तो फिर चिंता क्यों करें?

नाम : सेजल
कक्षा : 7 'बी'

आतंकवाद

किसी के घर में चूल्हा था, किसी का सपना पलता था,
एक पल में सब छिन गया, आतंक का साया चलता था।
रोशनियों से भरी गली में, अचानक सन्नाटा छा जाता,
माँ रोती है बेटे के लिए, दिल पत्थर बनता जाता।
पर दर्द के इस तूफान में भी, उम्मीदें फिर जन्म लेतीं,
टूटे दिलों की राख से, नई ताकतें खिलकर देतीं।

आँसू सूख भी जाते हैं, पर हिम्मत फिर रास्ता दिखाती,
जो गिरकर उठना सीख गया, किस्मत उसे झुककर
सलाम करती।

घर उजड़े, सपने टूटा करें—

पर इंसानियत न टूटे कभी,

दर्द बाँटना सीख लिया जब,

घावों में भी फूल खिले तभी।

आतंकवाद की आग भले ही, कितने मन जलाती हो,

पर एकता के सागर में वह, हर बार डूब जाती हो।

चलो बदलें हम हालातों को,

नफ़रत को दिल से दूर करें,

जिस दुनिया में डर पैदा हो,

उस दुनिया में प्यार भरें।

प्रत्यूष

7अ

अंधेरो को सब मिटा जाएं।

ज्ञान की ज्योति जगाएं हर ओर,

खुशियों से भर दें अपना छोर।

देश का नाम रौशन करें हम ,

हर दिल में अरमान धरें हम।

नयी सोच , नया परिधान,

हम छात्र हैं, हमारी पहचान।

चलो बढ़े हम ने ज़माने,

सपनों को सच करने के बहाने।

आओ मिलकर कसम ये खाएं,

हर दिल में उम्मीद जगाएं।

जसमीत कौर

कक्षा नौवीं (ब)

“नया साथी”

कंप्यूटर की इस दुनिया में,

एक नई धड़कन आई है।

मानव बुद्धि के संग मिलकर

AI ने पहचान बनाई है।

जब बुद्धि ने मशीन का हाथ थामा,

तो भविष्य ने नई रोशनी में खुद को फिर से परिभाषित
किया।

✿ नई उड़ान ✿ ।

चलो चलें हम सपनों की राह

लेकर दिल में विश्वास की चाह ।

मेहनत को साथी बना के चलें,

हर मुश्किल से हम लड़ते चलें।

सूरज सा उजियारा बन जाएं,



सोचें अब तारों की
भाषा में,
सपने हों डिजिटल
उजियारा लिए ।

तो चमत्कार भी सच हो सकते हैं।

आरूषि
7अ

प्रश्नों के जंगल में भटके जब,
यह राह दिखाकर साथ चले।
सीख-समझ कर आगे बढ़े,
हर पल नयी क्षमता फलें

हाथों में दुनिया सिमटी है,
हर उत्तर पल में मिल जाता है।
पर मानवता की कोमल संवेदनाएँ—
अब भी दिल ही दिल तक जाती हैं

AI एक दीपक है ज्ञान का,
जिससे नई राहें जगमग है।
पर दिशा सही चुनना हमको है,
तभी तो कल के सपने साकार हैं।



मशीन और मानव संग मिलकर,
नई सभ्यता रच सकते हैं।
बस सही दिशा में उपयोग करें,

जिंदगी

जिंदगी सिर्फ इशारों से पूरी बात नहीं होती.
सपने में मिले तो मुलाकात नहीं होती...
यह जिंदगी ख्वाब नहीं हकीकत है यारों
क्योंकि आंखें बंद करने से रात नहीं होती ..
हम फौजी इस देश की शान है...
और ये सरहद इस वतन की जान है...
जहां सभी धर्म के फूल फलते फूलते है
उसी सरजमीं का नाम हिंदुस्तान है...

- आर्यन 7ब

स्कूल

हो जाओ तैयार, स्कूल चले हम
जूते पहनो यार, स्कूल चलें हम !
रास्तों की सैर खाते हुए पैर
दोस्तों की बातें करते आगे जाते
हो जाओ तैयार, स्कूल चलें हम
जूते पहनो यार, स्कूल चले हम !
पढ़ाई लिखाई, मस्ती- धमाल

मिलकर सब करने कमाल

हो जाओं तैयार, स्कूल चले हम..

जूते पहनो यार, स्कूल चले हम..!

तन्त्र

कक्षा -9

कोशिश कर

कोशिश कर, हल निकलेगा।

आज नहीं तो कल निकलेगा।

अर्जुन के तीर सा सध,

मरुस्थल से भी जल निकलेगा।।

मेहनत कर, पौधों को पानी दें,

बंजर जमीन से भी फल मिलेगा।

ताकत जुटा, हिम्मत को आग दें,

फौलाद का भी बल निकलेगा।।

जिन्दा रख, दिल में उम्मीद को,

गरल के समुन्द्र से भी गंगाजल निकलेगा।

कोशिश जारी रख कुछ कर गुजरने की,

जो है आज थमा थमा से, चल निकलेगा।।।।

रिदिशा

छठी "ब"

छोटी तितली

तितली तितली प्यारी तितली।

इधर उधर उड़ती हर जगह उड़ती।

जब मैं तुम्हे पंख फड़फड़ाते देखती हूँ,

तो समझ जाती हूँ कि बसंत का समय आ गया है।

तितली तितली प्यारी तितली।

शगुन

7 अ

लघु कथा

मेहनत क्री कमाई

एक गांव में सुमित नाम का एक युवक रहता था, जो जल्दी अमीर बनने के सपने देखता था। उसने अपने दोस्त से कुछ धोखे से कुछ पैसे कमाए और छोटा सा एक कारोबार शुरू किया। शुरू में उसे मुनाफा हुआ, लेकिन जल्द ही उसका काम झूठ क्री नींव पर होने के कारण ठप्प पड़ गया। वह बहुत दुखी हुआ। उसके पिता ने समझाया कि मेहनत की कमाई ही टिकती है। सुमित ने ईमानदारी से काम करने का प्रण लिया और उसने खेत में मज़दूरी शुरू कर दी। सूरज की तपिश में काम करते हुए जब उसे पसीना बहाकर उसकी मज़दूरी मिली तो उसे असीम संतोष का अनुभव हुआ। उसने उस मेहनत की कमाई से एक छोटा सा पौधा खरीदा और अपने पिता को भेंट के रूप में दिया।



शिक्षा :- सच्ची सफलता और खुशी ईमानदारी से किये

परिश्रम में होती है।

नितिन कुमार
कक्षा - छठी "ब"

सर्दी की सुबह

रजाई कहे "मत निकलो अभी",
सूरज भी है छुपा कहीं।
आराम से पियो चाय अपनी,
हाथ को सेको, ना कोई जल्दी कहीं।।
आलस भरी सर्दियों की सुबह,
मासूम खुशी हर तरफ छाई।
ठंडी हवा, सँग गर्म रजाई,
सर्दी का मज़ा दिल में समाई।।

दिशिता
कक्षा :- छठी "ब"

पतंग और डोर

डोर से बंधी पतंग क्या जाने
स्वच्छंद आसमान में अपनी दिशा
चुन विचरना
क्या होता है ?
वो क्या जाने की
इंद्रधनुष को अपनी
मर्ज़ी से छूना
क्या होता है ?
क्या मांझे से कटकर भी
उसकी पहचान होती है ?
सच है कट कर वह
अपनी पहचान बनाती है ,
अपनी रौ में नाचती -गाती है ,
अपनी दिशा स्वयं निर्धारित कर
बढ़ती जाती है ,
कटी पतंग की शान कुछ और होती है।
गगना ग्रेस।
कक्षा - तीसरी "अ"

नए साल की सुबह

नए साल की नई सुबह में
नई दूब पर नव मोती आए
आसमान से घने बादलों ने
कुछ बूंदों से नए पुष्प खिलाए

नई चेतना जागी हर मन में
नव स्वप्न हैं नयनों में आए
नई उमंग से, नई तरंग से
सबका जीवन खिल-खिल जाए
कष्टों का हो जाए अंत अब
जीवन सुख-सागर बन जाए
शुभकामना है ये हमारी
जीवन में ऐसा नव वर्ष आए
देवांश मीणा
कक्षा दूसरी "अ"

14 नवम्बर - बाल दिवस

बाल दिवस वह शुभ दिन बच्चों,
जिस दिन चाचा जन्मे थे।
बच्चे ये दोनों पूरक थे,
तभी तो बच्चों के मन में थे।

नवभारत के सपने देखे,
पूर्ण करेंगे जिनको बच्चे ।
यीशु, ईशा ,अल्लाह यही हैं,
बच्चे बिल्कुल मन के सच्चे।

देश समाज की रौनक इनसे,

इनसे ही महकेगा भारत।
कलाम ,नरेंद्र ,सुखदेव इन्हीं में ,
इनमें छिपे हैं बुद्धि विशारद।

बाल दिवस बच्चों का दिन है,
यह है खुशियों का त्योहार।
जाति ,धर्म , मज़हब को भूलो ,
बरसे बस एक राष्ट्र का प्यार।
लाचारी, बेबसी दूर करो तुम,
चहुँ ओर उन्नति भरपूर करो तुम।
महाशक्ति बनकर उभरो तुम,
भूख,अशिक्षा से लड़ जाओ तुम।
पेट पकड़कर ना कोई सोए,
खेलकूद में बचपन खोए।
जूही, गुलाब से जग में महको,
इसकी खुशबू सभी सँजोए।
व्यक्तित्व सदा ऐसा हो तुम्हारा,
सदा करें हम तुम पर नाज़।
विश्व फलक पर तुम छा जाओ,
सशक्त करो तुम देश समाज।
भारतवासी तुममें देखें,
उज्ज्वल, विकसित स्वर्ण विहान।
तुम भारत के भाग्य विधाता,
तुम नानक, बुद्ध, महावीर भगवान।

आज के पावन बेला में तुम,
चाचा को श्रद्धा-पुष्प चढ़ाओ।
ऊँच-नीच का भेद मिटाकर,
विश्व-बंधुत्व धरा पर फैलाओ।
यदि हम ऐसा कर पाए तो,
बाल दिवस तब होगा सार्थक।
संस्कार बीज यदि बो पाए तो,
पुष्पित -पल्लवित हो बने प्रदर्शक।
काव्यांश यादव- चौथी" अ"

कहानी का नाम :- बादलों में छुपा गाँव

एक बार की बात है, एक दूर देश में मीरा नाम की एक छोटी लड़की रहती थी। वह पहाड़ों के पास एक छोटे से गाँव में रहती थी। हर शाम, वह अपनी खिड़की के पास बैठती और चोटियों पर तैरते बादलों को देखती।

एक दिन मीरा की दादी ने उसे एक राज़ बताया। "बादलों में एक छिपा हुआ गाँव है," उसने कहा। "लेकिन केवल दयालु हृदय वाले ही इसे देख सकते हैं।" मीरा उत्सुक थी, वह इस जादुई जगह को ढूँढना चाहती थी।

अगली सुबह, मीरा ने कुछ खाना पैक किया और पहाड़ पर चढ़ना शुरू कर दिया। चलते समय, उसने एक टूटे हुए पंख वाले छोटे पक्षी की मदद की, एक बूढ़े आदमी को थोड़ा पानी दिया, और एक खोया हुआ बिल्ली का बच्चा उठाया। वह नहीं जानती थी कि हर अच्छा काम उसे पंख की तरह हल्का बना देता है।

जब वह सर्वोच्च शिखर पर पहुँची तो कुछ अद्भुत घटित हुआ। एक हल्की धुंध ने उसे घेर लिया, और अचानक, वह सुनहरे बादलों से बने एक गाँव में खड़ी थी! घर हवा में तैर रहे थे, पुल इंद्रधनुष से बने थे और लोग उसे देखकर गर्मजोशी से मुस्कुराते थे।

एक बुद्धिमान वृद्ध महिला आगे बढ़ी। "मीरा, तुम्हारी दयालुता के कारण तुम्हें हमारा छिपा हुआ गाँव मिल गया है। बहुत कम लोगों ने इसे देखा है, लेकिन आपका हृदय काफी शुद्ध है।"

मीरा ने जादुई जगह की खोज में दिन बिताया। वह बादलों के खरगोशों के साथ खेलती थी, हवा के साथ नृत्य करती थी और यहां तक कि पक्षियों के साथ उड़ती थी। जैसे ही सूरज डूबा, उसने महसूस किया कि वह धीरे-धीरे अपने गाँव की ओर तैर रही है।

जब उसकी आंख खुली तो वह घर पर थी। क्या यह सब एक सपना था? मीरा मुस्कुराई, यह जानते हुए कि बादलों में बसा गाँव वास्तविक था - इसे खोजने के लिए किसी अन्य दयालु हृदय की प्रतीक्षा कर रही थी।

कहानी का सार: दयालुता और अच्छा दिल जादुई रोमांच का कारण बन सकता है!

नाम -मोक्ष
कक्षा - चौथी
अनुभाग -अ

हमारा देश -भारत

भारत एक ऐसा देश है जो अपनी विविधता में एकता के लिए जाना जाता है। यहाँ अनेक धर्म, जाति, भाषा और संस्कृति के लोग मिलकर रहते हैं। भारत की यही विशेषता इसे महान बनाती है।

भारत की संस्कृति अत्यंत प्राचीन और समृद्ध है। यहाँ शिक्षा का विशेष महत्व है। प्राचीन काल में गुरुकुल प्रणाली के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी, जहाँ विद्यार्थी गुरु के सान्निध्य में रहकर ज्ञान प्राप्त करते थे। शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि जीवन के नैतिक मूल्यों की भी शिक्षा दी जाती थी।

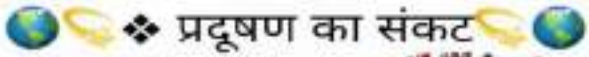
वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप बदल गया है। अब शिक्षा विद्यालयों और महाविद्यालयों में दी जाती है।

आधुनिक शिक्षा से हमें विज्ञान, तकनीक और अन्य विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करती है और उसे समाज का जिम्मेदार नागरिक बनाती है।

देश के विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षित व्यक्ति समाज में जागरूकता फैलाता है और राष्ट्र की प्रगति में योगदान देता है। इसलिए हमें शिक्षा को महत्व देना चाहिए और सभी को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलना चाहिए।

अंत में हम कह सकते हैं कि शिक्षा और संस्कृति मिलकर भारत को एक सशक्त और विकसित राष्ट्र बनाती हैं।

काव्यांश यादव
चौथी अ

 **प्रदूषण का संकट** 

हवा में ज़हर, पानी में जाल,
धरती रोए, हुआ बेहाल।
पेड़ों की शाखें सूख गईं,
नदियाँ भी अब रुठ गईं।



कभी जहाँ था हरियाली का राज,
अब वहाँ धुएँ का साज-सामान आज।
प्लास्टिक के ढेर, धूल का रंग,
साँस भी हो गई अब तंग।

मनुष्य ने खुद ये जाल बुना,
स्वार्थ में धरती को दूषित किया।
अब भी अगर ना सुधरे इंसान,
बचेगा न जंगल, न होगा जहान।

आओ मिलकर प्रतिज्ञा करें,
धरती को फिर से हरियाली दें।
पेड़ लगाएँ, स्वच्छ बनाएँ,
जीवन को सुंदर बनाएँ।



ट्रिस्टेन
पांचवीं बी

माँ

मेरी माँ है बहुत ही प्यारी,
सबसे न्यारी, सबकी दुलारी।
माँ की बातें बहुत हैं प्यारी,
सारे जग में सबसे न्यारी।
भोजन उसका इतना स्वादिष्ट,
सब कुछ होता बहुत पौष्टिक।
अकेले करती है सारा काम,
सुबह से हो जाती है शाम।
माँ का हृदय है बहुत कोमल,
बच्चों जैसा बहुत चंचल।
मैं हूँ उसकी आँखों का तारा,
मैं हूँ उसकी जीवन-धारा।

-अदनकेत

कक्षा - 6 'अ'

वार्षिक निरीक्षण की झलकियां

गुरुग्राम संभाग के सहायक आयुक्त श्री रणधीर सिंह अपने निरीक्षण दल के साथ विद्यालय क्रियाओं का निरीक्षण करते हुए-







शिक्षक दिवस की कुछ झलकियां

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में विद्यालय में शिक्षक दिवस मनाया गया। प्राचार्या महोदया, सभी शिक्षकगण एवं छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक इस दिवस को मनाया। इसकी कुछ झलकियाँ प्रस्तुत हैं।





अलंकरण समारोह -विद्यार्थी परिषद के सभी सदस्य







भारत स्काउट एंड गाइड की गतिविधियाँ





ENGLISH

SECTION



Digital Learning in Student Life



Digital learning has become an important part of education in today's world. With the help of technology, students can now learn anytime and anywhere. Online classes, educational apps, and video lessons have made studying more interesting and interactive. Students can easily access study materials, notes, and practice tests with just a few clicks. This makes learning more flexible and convenient, especially for those who want to revise topics again and again.

Digital learning also helps students understand difficult concepts more clearly. Visual explanations through videos and animations make subjects like Science and Mathematics easier to learn. It also

encourages self-learning, as students can explore topics beyond their textbooks. During situations like the COVID-19 pandemic, digital learning played a very important role in continuing education without interruption.

However, digital learning also has some disadvantages. Spending too much time in front of screens can affect students' eyesight and health. It may cause headaches, eye strain, and a lack of physical activity. Moreover, students can easily get distracted by social media, games, and other online content. This can reduce their concentration and affect their studies.

Another challenge is that not all students have equal access to digital devices and the internet. This creates a gap in learning opportunities among students. Also, online learning sometimes lacks personal interaction with teachers and classmates, which is important for better understanding and communication.

Therefore, it is important to use digital learning wisely. Students should limit their screen time and take regular breaks. They should focus on educational content and avoid distractions. A proper balance between online and offline learning is necessary for overall development.

In conclusion, digital learning is a powerful tool in modern education. When used properly, it can greatly improve students' knowledge, skills, and confidence. It is up to students to use this technology in a responsible and beneficial way.

Deleena

9- A

The Joy of Learning Beyond the Classroom: My ATL Journey



Learning does not always happen inside a classroom. Some of the most exciting lessons come from exploring, creating, and experimenting on our own. My experiences in the Atal Tinkering Lab (ATL) showed me how joyful learning can be when we step beyond textbooks and use our hands and imagination.

One of my favourite experiences was working with Quarky, an AI and robotics tool. Using Quarky, I learned how coding

works in real life—how simple blocks of code can make a robot move, sense, and respond. It felt exciting to see my ideas come alive through programming.

I also built a hydraulic arm, which helped me understand the real science behind hydraulics, pressure, and movement. As I connected syringes and tubes with water, I could see how force travels and creates motion. This project taught me problem-solving, patience, and the thrill of building something that actually works.

Using a 3D pen was another fun part of my ATL journey. It allowed me to draw shapes that stood up in the air, turning simple lines into real objects. It taught me creativity, steady hand control, and how designs take shape layer by layer.

Finally, I learned how to use a 3D printer. Watching the printer create a model from a digital design felt almost magical. Understanding how slicing, layering, and printing work made me realise how technology is shaping the world of tomorrow.

All these experiences—robotics with Quarky, building a hydraulic arm, using a 3D pen, and operating a 3D printer—taught me much more than what a textbook can explain. They helped me think creatively, solve problems, and believe in my ability to invent new things.

For me, the real joy of learning beyond the classroom is discovering that knowledge is everywhere, especially when we explore with curiosity and confidence.

Lian Suanmung Samte

8 B

Trip to Ambala – Scout–Guide Camp



Bags were packed, hearts full of cheer,
Ambala was calling, adventure was near.
With scarves and badges shining bright,
We left at dawn, our spirits light.

Songs and laughter filled the train,
New friends were made on every lane.
Tents were pitched beneath the sky,
Dreams took wings, we learned to fly.

We cooked our meals on an open flame,
Teamwork and courage — more than a
game.

Drills at sunrise, stories at night,
Stars above sparkled, oh, what a sight!

From flag hoisting to morning prayer,
We learned to serve, to love, and to care.
Ambala's breeze, so fresh and kind,
Left golden memories in our minds.

Now back at school, we proudly say,
That camp has taught us the Scout and
Guide way.
Duty, discipline, joy, and pride —
Forever a Guide, with friends by our side

Yutika
8 B

Believe in the Impossible



Believe in the impossible,
In dreams that seem too far,
For every tiny wish you make
Can shine just like a star.

The mountain may look giant,
The sky too big to chase,
But courage lives inside you,
A quiet, glowing place.

Take steps though they are little,
Let hope be your guide,
The door of miracles will open
When faith walks by your side.

So trust your heart's whisper,
Stand tall when troubles call,
For those who believe in the impossible
Can truly do it all.

Anushka
8 A

A Walk in Rain



Rain came down with a tap-tap sound,
I walked alone on soggy ground.
My shoes went splash, the trees did sway,
The clouds were soft, dark and grey.
The wind was cool, it brushed my skin,
I smiled and let the joy begin.
The puddles danced, the birds flew high,
Raindrops fell from the open sky.
My steps were slow, my heart was light,
The world looked fresh and clean and bright.
A dog ran past with a wagging tail,
Its happy bark cut through the gale.
No rush, no noise, just peace and play,
A walk in rain made my whole day.

Punit Sharma
8 B

Sunrise of Hope



The deepest night has lost its lease,
A signal calls for inner peace.

The world shifts from a shade of gray,
To welcome in the brand-new day.
A slow curve arcs on the horizon's rim,
Making the future look less grim.
The sun, a hero, strong and warm,
Protects us from every storm.
It shows that bad things always end,
And strength is here, on which we depend.
So breathe the morning, clear and cool,
Hope is the greatest, golden rule.

Anish
8 A

It's OK Not to Be Perfect



The sun doesn't rise with a perfect glow,
The ocean doesn't always smoothly flow.
The moon has its phases, the tides their
change,
Within the wild, nothing is perfectly
arranged.
It's okay not to be perfect, to have a slight
lean,
To smudge the edges of the pristine scene.
For beauty is found in the fracture and
crack,
In picking yourself up, putting life back on
track.

A heart that has loved wears its history well,
 In stories of loss, in joys it can tell.
 The lines on your face are the maps of your
 years,
 Etched by your laughter, your struggles,
 your tears.
 So let go of the pressure, the need to be
 flawlessly great,
 Embrace the unfinished — it's never too
 late.
 To live in the truth of the human design,
 Where it's okay not to be perfect, and
 beautifully fine.

Inika
 8 A

The Halls We Walk



The halls we walk, a second home,
 Where seeds of learning are truly sown.
 With every class and every friend,
 A story starts without an end.
 From the morning bell to the final chime,
 We build our futures, passing time.
 In books we read of days of old,
 And in our hearts, our own stories unfold.
 Teachers guide with patient hands,
 The best and brightest in the land.
 They light the way, they help us see,
 The wonderful things that we can be.

Through sports and art and science bright,
 We find our passions, our shining light.
 For every challenge we overcome,
 Another victory, another hum.
 So in these halls, let's leave our mark,
 A little light to fight the dark.
 With knowledge gained and friendships
 true,
 Our school spirit will always shine through.
 Satyasandh
 8 A

Whispers of the Morning 🌱



When dawn unfolds her golden wings,
 And softly hums, the skylark sings,
 The world awakes in tender light,
 Chasing away the cloak of night.
 Each dewdrop holds a tiny gleam,
 A silver spark, a fragile dream.
 The breeze that stirs the sleeping trees
 Carries the scent of distant seas.
 Through shifting clouds and skies so wide,
 Hope walks with sunlight at her side,
 For every end, a start is near—
 The heart still blooms when skies are clear.
 So let the morning whisper low
 Of paths to take, of seeds to sow,
 For life is just a song begun—
 A gentle dance beneath the sun.

Anushka Yadav
 8

How Artificial Intelligence Is Shaping Our Future



Artificial intelligence is shaping our future by transforming industries such as healthcare, finance, and manufacturing through automation, enhanced decision-making, and personalized services. It is also changing daily life with technologies like smart assistants and autonomous vehicles, while simultaneously presenting ethical challenges related to job displacement, bias, privacy, and the need for responsible governance. Navigating these issues is crucial to harnessing AI's potential for a more productive, equitable, and innovative future.

Industry and Economic Transformation

- **Automation and efficiency:** AI is optimizing tasks, reducing errors, and lowering costs in sectors such as manufacturing and logistics through predictive maintenance and process optimization.
- **Data-driven innovation:** AI is accelerating innovation by enabling faster and more efficient data analysis, which helps in areas ranging from marketing and cybersecurity to energy and agriculture.
- **Economic growth:** AI is expected to drive significant economic growth by boosting labor productivity, creating new markets and services, and promoting innovation across various sectors.
- **Personalized experiences:** AI is used to personalize customer experiences in retail and to create more effective and customized treatments in healthcare.

Impact on Daily Life and Work

- **Enhanced daily convenience:** AI-powered smart assistants, recommendation engines, and autonomous vehicles are becoming increasingly integrated into our daily routines.
- **Reshaping the workforce:** AI is automating routine tasks while creating new roles in areas

such as data science and software development, requiring continuous learning and adaptation from professionals.

- **Augmenting human capabilities:** By handling complex data analysis, AI allows humans to focus more on creative and strategic tasks.

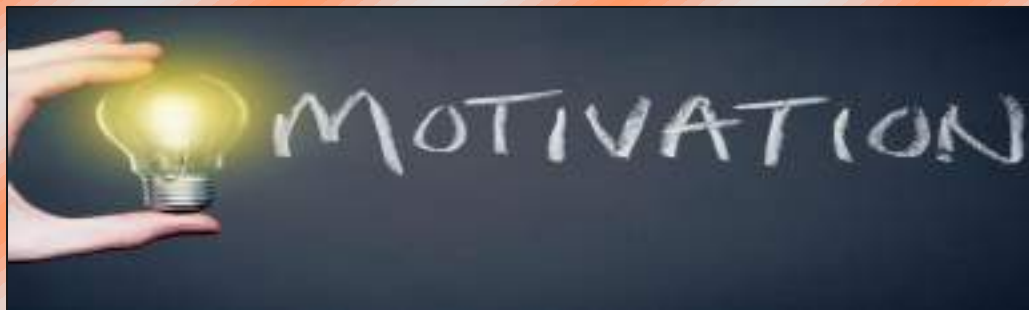
Challenges and Ethical Considerations

- **Job displacement:** The automation of tasks raises concerns about potential job displacement and the need for workforce retraining.
- **Bias and equity:** AI systems can perpetuate and even amplify existing biases, particularly in decision-making processes related to loans, housing, and medical treatment, leading to unfair outcomes.
- **Privacy concerns:** The collection and analysis of vast amounts of data raise significant privacy issues that must be carefully addressed.

Tanvi

8 A

Motivation



Motivation is the inner drive that propels us toward our goals, transforming desires into action through a blend of self-belief, clear objectives, and resilience. It acts as a vital force for personal and professional growth, helping us overcome obstacles and guiding the journey from dreams to reality by providing purpose and direction. Motivation serves as an essential internal compass, guiding individuals through challenges and pushing them to achieve their goals, turning abstract ideas into concrete steps. This inner force can stem from intrinsic sources, such as personal enjoyment, or extrinsic ones, such as praise and rewards, but ultimately, it is the individual's mindset that sustains momentum.

Motivation is not just about starting; it is about continuing. It transforms a simple desire into a committed pursuit, pushing individuals to work harder, improve performance, and dedicate themselves to their tasks. Motivated individuals build healthier habits, learn new skills, and achieve lifelong ambitions. Ultimately, cultivating motivation involves understanding its

sources, nurturing a positive outlook, and consistently aligning daily actions with long-term aspirations, making it an indispensable element of a fulfilled and successful life.

Motivation is not monolithic; it arises from various sources, including intrinsic factors like passion and interest, and extrinsic factors such as rewards, recognition, and praise. Self-motivation—the ability to drive oneself without external pressure—is a powerful trait, but external motivators also play a crucial role in supporting those who need encouragement. Sources of motivation can range from reading inspirational books and listening to motivational speakers to finding strength in nature and supportive relationships, all of which contribute to a positive mindset.

Sustaining motivation requires setting realistic goals, embracing discipline, and viewing setbacks as learning opportunities rather than failures. Developing resilience and optimism is key, enabling individuals to bounce back from difficulties and maintain belief in a brighter future. By understanding our needs, aligning our actions with our passions, and consistently reminding ourselves of our purpose, we build the momentum needed to overcome challenges and transform aspiration into reality. In this way, motivation becomes a continuous journey of growth and progress.

Sharika

8 A

Beneath the Shadows



Who am I beneath the shadows?
Who am I beneath the mask of friends and society?
What will I be if the mask is peeled off?

Am I the one with two faces?
Will I be the one who thinks deeply about righteousness?
Am I the one intoxicated with hard work?

Questions are many.

But—

Yes, I am the only one who knows who I am.

I am the one who is driven by competition.
I am a flicker of fire that can grow into a forest fire.

I have tears that show me the real world of guilt and innocence.

I am the one who still thinks someone is coming—
someone even stronger to defeat...

ASHWIN R

9TH B

Dream Big



Dream big, little heart, don't fear the sky,
Spread your wings and learn to fly.
The world is wide, the stars are near,
Chase your hopes, forget your fear.

Each morning brings a chance anew,
A brighter path, a clearer view.
The sun will rise, the night will fade,
Don't let your dreams simply fade away.

Sometimes storms may cloud your way,
And doubts may whisper, "Don't you stay."
But even rain can help you grow,
And through the tears, your courage shows.

The mountain tall may seem so high,
But step by step, you'll touch the sky.
For every climb begins so small,
And one strong heart can conquer all.

Anya Deshwal
6 A

What Are Tears?



Tears are not just drops of water
That fall from your eyes;
They are gentle signs of healing
From deep within your heart.
These tiny, shining droplets
Do not come in vain;
They help you grow stronger
After every little pain.
They come to teach you lessons,
To guide you on your way;
Helping you become better
With each passing day.
Tears remind you softly
To stand up and try again;
To learn from your mistakes
And rise above the pain.
That's why tears are not meant
Only to make you cry—
They bring hope and courage
And help your spirit fly.
They show you the bright side
Of life's every part—
Turning every weakness
Into a stronger heart.

HAMMAD ALI
9TH B

My Mother – The Moonlight of My Life



Like the full moon, my mother shines bright,
A heart of wisdom, glowing with light.
Her gentle eyes hold endless grace,
Love and strength bloom on her face.

When her little ones make mistakes,
She forgives us all for our small mistakes.
With a calm and gentle smile, she soothes
our fears,
Wiping away our tears.

Even when sorrow clouds her day,
She hides her pain in a gentle way.
Her smile still glows—warm and true,
Teaching us hope in all we do.

O precious mother, my guiding star,
Your love reaches me, no matter how far.
Your kindness and care—so pure, so deep,
Are treasures in my heart I'll always keep.

— Niveditha, Class 6A

Chase Your Dreams 🌞



Dreams are stars that light the night,
Guiding hearts to shine so bright.
Even if the path seems long,
Hope will make your spirit strong.

Failures come, but don't you fear,
Every step will bring you near.
Work with courage, never rest,
Give your heart and do your best.

One small dream can start it all—
Rise with strength, stand proud and tall!

— Amrita, Class 6A

My School, My Pride



My school... my pride!
Where we have a wonderful ride.
We read, we write,
And make our future bright.

We learn to respect,
And not always expect.
We laugh, we cry,
We play and study
With our best buddies.

Respecting elders, obeying parents,
Becoming sincere and punctual—
These are the habits we learn.
And that is why we call it...
“My School, My Pride.”

Poem by: Himanshu
Class 5B | Roll No. 5

Discipline



Discipline is a guiding light,
Teaching us what's wrong and right.
It shapes our thoughts, our words, our way,
And leads us to a brighter day.

With discipline, we learn to grow,
To work with patience as progress shows.
It builds our strength, both mind and soul,
And helps us reach our every goal.

— Vedika, Class 5B

SAVE WATER



Save water, save water,
Water is our life.
Water is used for everything;
Without water, there is nothing.

We cannot live without it,
So we should always
Take care of it.

Never waste a drop of water.
All living things need water.
Together, we can save water,
So we should always save water.

Manvi Negi

Class 4B

Amazing Sports Facts



1. The Olympic Games are held once every four years.
2. Cricket is one of the most popular sports in India.
3. A football match lasts for 90 minutes, divided into two halves.
4. Sachin Tendulkar was the first player to score 100 international centuries.
5. The Olympic flag has five rings, representing five continents.
6. Usain Bolt is known as the fastest man in the world.
7. Tennis has four Grand Slam tournaments—Australian Open, French Open, Wimbledon, and US Open.
8. P. V. Sindhu became the first Indian woman to win an Olympic silver medal in badminton.
9. Brazil has won the maximum FIFA World Cups.
10. The FIFA World Cup is held every four years.
11. Badminton is the fastest racket sport in the world.
12. Kabaddi is one of the oldest traditional Indian sports.

Parv

Class -4 B

THE JOY OF HELPING OTHERS



Helping others is one of the best things we can do. It makes others happy and also fills our own hearts with joy. Even a small act of kindness can make a big difference.

When we help someone—like sharing our lunch, helping a friend with homework, or caring for animals—we feel proud and peaceful. It teaches us kindness, love, and teamwork.

Helping others doesn't always mean giving money or big gifts. Sometimes, just a smile, kind words, or lending a hand are enough. When we help people, we make the world a better and happier place.

So, let's promise to always help those in need. Because the more we give, the more happiness we receive!

-Tristen

Class 5B

संस्कृत

खंड



अस्माकं देशः

भारतोऽस्माकं देशः । अस्माकं देशोऽति विशालं अस्ति । अस्योलरस्यां दिशि हिमालयों वर्तते । सागरः अस्य पादप्रक्षालनं करोति । अस्य भूमिः शुस्यश्यामला अस्त । अस्माकं देशे अनेके प्रदेशाः सन्ति । अस्माकं देशे अनेकाः भाषाः सन्ति । अस्मिन् देशे विभिन्नधर्मावलम्बनः वर्तन्ते । अस्माकं देशे विविधाः संस्कृतयः सन्ति । परं सर्वासु संस्कृतिषु सादृश्यं वर्तते ।

वयं मातुः औरसाः पुत्राः इव निवसामः । अस्माकं हृदये भावात्मिकी एकता विद्यते । सङ्कटकाले वयं क्षेत्रभेदान् परित्यज्य देशहितं चिन्तयामः । भारतभूमिः अस्माकं माता अस्ति । वयं भारतभूमेः पुत्राः स्मः । अस्याः सम्मानं रक्षितुं वयं सदैव तत्पराः स्मः । भारते प्रभुतम् अन्नम् भवति । भारते अनेकानि ऐतिहासिकस्थलानि सन्ति । भारते गङ्गा - यमुना - गोदावरी - सरस्वती - नर्मदादयः नद्यः प्रवहन्ति ।

धन्यवाद :

नामः सुभा श्री अखंडे

रोल नं: 45

कक्षा: आठवीं (अ)

तत्रावश्यकम् । प्रारब्धविरोधेऽपि यस्य मनसि निश्चयो दृढः भवति स एव यशसः पात्रं भवति । इतिहासे अपि बहवः महापुरुषाः दृष्टाः ये कठिनतमावस्थायाम् अपि स्वस्य उद्देश्ये निश्चलतां धारयित्वा विजयशिखरं प्राप्तवन्तः ।

विद्यालये ज्ञानदीपाः प्रज्वलन्ति सर्वदा ।

विद्यार्थिनः प्रेरयन्ति गुरवः शुभमार्गतः ॥

संस्कृतभाषा सुन्दरी, संस्कृतिर्मूलरूपिणी ।

तस्याः अध्ययनं कृत्वा, वर्धते बुद्धिसम्पदा ॥

शुचिता, शीलसम्पन्नाः, भवन्ति ये निरन्तरम् ।

ते भविष्यन्ति देशस्य, उज्ज्वलाः गौरवास्पदाः ॥

आओ वयं मिलित्वा सर्वे, संस्कृतं वर्धयाम्यहम् ।

विद्यया दीप्यमानाः स्युः, कर्तव्या लोकसेवया ॥

नामः : चिरागः

कक्षा : अष्टमी अ

सरिता कथयति

पश्य किं कथयति इयम् सरिता
मां तिष्ठ 'चल' वदति इयम् सरिता
कलकध्वनि कृत्वा सदैव कहति
कदापि न तिष्ठति इय सरिता
त्वमापि "चल" सदैव चल
इदमेव कथयति इयम् सरिता।

मयंक 6अ

संस्कृत महत्त्व

विश्वस्य हितं संस्कृते निहितम् ।
पठनमेव नास्ति पर्याप्तम् ॥
सम्भाषणमपि सततं कुर्यात् ।
संभाषणार्थं समयं दद्यात् ॥

कार्यालये वा तथा गृहे वा ।
गमनागमने, क्रीडास्थाने वा ॥
संस्कृतेन संभाषणं करोतु ।
त्रुटिः भविष्यति, चिन्ता मास्तु ॥

शनैः शनैः भाषा शुद्धा भवेत् ।
संस्कृतेनैव सततं वदेत् ॥

सत्यासध

8 'A'

भारतस्य संस्कृतिः

सत्यं वद धर्मं चर , मातृत्व भव ।

पितृदेवो भव , आचार्यदेवो भव ॥

भारतदेशः जगतः प्राचीनतमः देशः अस्ति।अस्य देशस्य संस्कृतिः अतीव प्राचीनः अपि च समृद्धा अस्ति।

भारतीयसंस्कृतिः धर्म, सत्य, अहिंसा, करुणा, सेवा, श्रद्धा च इत्येषां मूल्ये आधारितं अस्ति। अत्र जीवनस्य प्रत्येक अंशः संस्कारयुक्तः अस्ति। बाल्यकालात् एव बालकाः नम्रतां, श्रद्धां, गुरुप्रतिपत्तिं च सन्ति, तथापि शिक्षन्ते।

भारते विविधाः भाषाः वेशभूषा, अहाराः, नृत्यगीतानि च सन्ति, तथापि सर्वत्र एकता दृश्यते।

“वसुधैव कुटुम्बकम्”

इति विचारः अस्माकं संस्कृतेः हृदयम् अस्ति। अस्माकं ऋषयः विश्वशान्तेः प्रार्थनां कुर्वन्ति

“सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः”

आधुनिकयुगेऽपि अस्य मूल्यस्य संरक्षणं आवश्यकम् अस्ति। यदि वयं अस्य संस्कृतेः अनुसरणं कुर्मः, तर्हि राष्ट्रस्य गौरवम् अधिकं भविष्यति।

अनुष्का यादव

कक्षा 8 अ

प्रकृतेः सौन्दर्यम्

प्रभाते सूर्योदयः स्वर्णकिरणैः जगत् आलोकयति।
पक्षिणः मधुरं गीतं गायन्ति मनसः हर्षं जनयन्ति।
पवनः शीतलस्पर्शं दत्ते श्रान्तिं हृदये ददाति।
वनानि हरीतिमा धृत्वा पृथ्वीं सुशोभयन्ति।
नद्यः कलकलध्वनिभिः प्रकृतिं नृत्यति इव दर्शयन्ति।
मेघाः नीलमण्डले चित्रं निर्माय शोभां वहन्ति।
भूमिः सर्वं पोषयन्ती मातृस्वरूपा इव वर्तते।
अहो! प्रकृतिः अनन्तं सौन्दर्यं धत्ते यत् सर्वान् मोदं ददाति

-अनवी यादव

नौवीं 'ब'

संस्कृत भाषायाः महत्त्वम्

संस्कृत भाषा अस्माकं देशस्य प्राचीनतमा भाषा अस्ति। प्राचीनकाले सर्वे एव भारतीयाः संस्कृतभाषाया एव व्यवहारं कुर्वन्ति स्म। कालान्तरे विविधाः प्रान्तीयाः भाषाः प्रचलिताः अभवन्, किन्तु संस्कृतस्य महत्त्वम् अद्यापि अक्षुण्णं वर्तते। सर्वे प्राचीनग्रन्थाः चत्वारो वेदाश्च संस्कृतभाषायामेव सन्ति। संस्कृतभाषा भारतराष्ट्रस्य एकतायाः आधारः अस्ति। संस्कृतभाषायाः यत्स्वरूपम् अद्य प्राप्यते, तदेव अद्यतः सहस्रवर्षपूर्वम् अपि आसीत्। संस्कृतभाषायाः स्वरूपं पूर्णरूपेण वैज्ञानिक अस्ति। अस्य व्याकरणं पूर्णतः तर्कसम्मतं सुनिश्चितं च अस्ति।

आशुलेश सातवीं अ

वृक्षाणां महत्त्वम्

वृक्षाः प्रकृतेः महत्वपूर्णाः उपादानानि सन्ति। ते न केवलं पर्यावरणं रक्षन्ति, अपितु जीवनस्य आधारं च ददति। वृक्षाः वायुमलिनतां निवारयन्ति तथा प्राणवायोः उत्सर्जनं कुर्वन्ति। तेन मानवः, पशवः, पक्षिणः च जीवितुं समर्थाः भवन्ति। वृक्षाः छायां ददन्ति, फलानि उपहरन्ति, औषधीयं गुणं च संजोयन्ति। वर्षाकाले मेघानां आकर्षणं कुर्वन्ति, येन भूमेः उर्वरता वर्धते।

वृक्षाणां कटनेन पर्यावरणे अनेकाः समस्याः उत्पद्यन्ते। वायुमलिनता, जलस्रोतानां क्षयः, तथा वैश्विकतापः च वृक्षाणां अभावे वृद्धिं प्राप्नुवन्ति। अतः वृक्षारोपणं धर्मः इव अवश्यं कर्तव्यम्।

भारतीयसंस्कृतौ अपि वृक्षाः पूजनीयाः मत्वा तेषां रक्षणं कर्तव्यं उक्तम्। "वृक्षो रक्षति रक्षितः" इति नीतिवाक्यं प्रसिद्धं वर्तते। यदि प्रकृतिं संरक्षितुं इच्छामः, तर्हि वृक्षानां संरक्षणं अनिवार्यं। वृक्षाः एव जीवनस्य स्रोतः

भूमि
कक्षा 7अ

अनुशासनस्य महत्त्वं जीवनस्य संदर्भे

संस्कृतभाषायामेव अनुशासनं जीवनस्य महत्त्वपूर्णं तत्त्वं वर्तते। अनुशासनं विना जीवनं अराजकं भवति। अत्र केचन श्लोकाः अनुशासनस्य महत्त्वं प्रदर्शयन्ति।

1. अनुशासनस्य महत्त्वं

श्लोकः

"नियमितं भवेत् सर्वं,
नियमः कारणं श्रियः।
अनियमः प्रलयाय,
नियमः सुखदायकः।"

अर्थः

सर्वं कार्यं यदि नियमितं भवति, तर्हि सुखं एवं समृद्धिः प्राप्यते। अनुशासनं विना विनाशः अनिवार्यः।

2. विद्यार्थिनां जीवनं अनुशासनं विना अशक्यं

श्लोकः

"शिष्याणां अधीतिः सफलं न भवति,
यदि ते न सेव्यन्ते नियमाः गुरुणाम्।"

अर्थः

विद्यार्थिनां अध्ययनं तदा एव सफलं भवति यदा ते गुरुजनानां नियमं अनुयन्ति।

3. अनुशासनस्य प्रभावः

श्लोकः

"अनुशासनं धर्मस्य मूलं,

अनुशासनं च जीवनस्य आधारः।
अनुशासनेन च लोकः स्थितिं प्राप्नोति।"

अर्थः

अनुशासनं धर्मस्य मूलं तथा जीवनस्य आधारः अस्ति। अनुशासनं विना लोकः स्थिरः न भवति।

4. अनुशासनं च संस्कारः

श्लोकः

"अनुशासनं भवेद् यस्मिन्,
संस्कारः सदा भवेत्।
संस्कारो यदि जीवनं,
तदाऽनुशासनं च मूलतः।"

अर्थः

जहाँ अनुशासनं अस्ति, तत्र संस्कारः भवति। संस्कारयुक्तं जीवनं तदा सम्भवते यदि अनुशासनं मूलं भवति।

अनुशासनं जीवनस्य सर्वासां सफलतानां आधारः अस्ति। यदि जीवनं सुखं, शान्तं च इच्छ्यते, तर्हि सर्वे अनुशासनं पालनं कुर्वन्तु।

धन्यवादः

यश जजोरिया

8अ

आधुनिककाले संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

संस्कृतभाषा न केवलं भारतस्य सांस्कृतिकं, धार्मिकं च आधारः अस्ति, अपितु आधुनिककालेऽपि तस्य उपयोगः अत्यन्तं महत्त्वपूर्णः अस्ति। संस्कृतं न केवलं प्राचीनं भाषा अपितु आधुनिकजीवने अपि उपयोगी अस्ति। एषः विचारः निम्नैः श्लोकैः व्याख्यातः।

1. संस्कृतं विज्ञानस्य आधारः

श्लोकः

"संस्कृतं नाम वेदस्य, शास्त्राणां च मूलकम्।
विज्ञानस्य चाधारं, सर्वभाषासु उत्तमम्।"

अर्थः

संस्कृतं वेदानां, शास्त्राणां च मूलभाषा अस्ति। एषा भाषा विज्ञानस्य आधारं च, तथा सर्वभाषासु श्रेष्ठा अस्ति।

2. संस्कृतस्य वैश्विकः उपयोगः

श्लोकः

"सर्वत्र भाषा संस्कृता,

विज्ञानं धारयत्यलम्।
भविष्ये तु लोकस्य,
जीवनं तेन रक्षितम्।"

अर्थः

संस्कृतं सर्वत्र विज्ञानं धारयति। भविष्येऽपि संस्कृतस्य माध्यमेन जीवनं संरक्षितं भविष्यति।

3. संस्कृतं संगणकविज्ञाने उपयोगी

श्लोकः

"संस्कृता सरला भाषा,
संगणके च सुस्थिरा।
सूक्ष्मेऽपि विचारेण,
निर्णयं शीघ्रं प्रददाति।"

अर्थः

संस्कृतं सरलभाषा अस्ति, या संगणकविज्ञाने सुस्थिरं कार्यं करोति। एषा भाषा सूक्ष्मविचारं कृत्वा शीघ्रं निर्णयं ददाति।

संस्कृतस्य सांस्कृतिकं महत्त्वम्

4. श्लोकः

"संस्कृता भारतस्य आत्मा, धर्मस्य च प्रतीकता।
संस्कृतेः संरक्षणं कुर्वन्, संस्कृति जीविता भवेत्।"

अर्थः

संस्कृतं भारतस्य आत्मा अस्ति, या धर्मस्य प्रतीकं च। यदि संस्कृतस्य संरक्षणं कृतं भवति, तदा संस्कृति जीविता भवति।

5. आधुनिके शिक्षायाम् संस्कृतम्

श्लोकः

"संस्कृते अध्ययनं कुर्यात्, विज्ञानं चाधिगच्छतु।
आधुनिके समाजेऽपि, संस्कृतेः स्थानं सदा स्थिरम्।"

अर्थः

संस्कृतस्य अध्ययनं कृत्वा छात्राः विज्ञानं च ज्ञानं लभन्ते। आधुनिकसमाजे अपि संस्कृतस्य स्थानं अचलं भविष्यति।

निष्कर्षः

संस्कृतं केवलं प्राचीनं न, अपितु आधुनिकसमाजेऽपि उपयोगी अस्ति। एषा भाषा विज्ञानं, तकनीकं, दर्शनं, साहित्यं च धारणीयं शक्तिं धारयति। तस्मात्, संस्कृतस्य प्रचारं संरक्षणं च कर्तव्यम्।

धन्यवादः

प्रतीक गुप्ता

8 ब

संस्कृतभाषायां लोकोक्तयः एवं मुहावरेः

संस्कृतभाषा लोकोक्तिभिः (proverbs) एवं मुहावरैः (idioms) समृद्धा अस्ति। एते संस्कृतस्य सौन्दर्यं एवं सारं प्रकटयन्ति।
अत्र केचन प्रसिद्धाः लोकोक्तयः तथा मुहावरेः दीयन्ते।

लोकोक्तयः (Proverbs)

1. "सत्यमेव जयते नानृतं"

अर्थः सत्यं सदा विजयी भवति, असत्यं कदापि न।

2. "विद्या ददाति विनयं"

अर्थः विद्या विनयं ददाति, अर्थात् शिक्षायाः फलं नम्रता अस्ति।

3. "आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्"

अर्थः यत् स्वस्य प्रतिकूलं, तत् परेषां प्रति कदापि न कुर्यात्।

4. "अधजल गजजल"

अर्थः कर्तव्यस्य प्रचुरता किन्तु क्रियायाः अभावः।

5. "नास्ति विद्या समं चक्षुः"

अर्थः विद्या एव सर्वोत्तमं नेत्रं अस्ति।

मुहावरेः (Idioms)

1. "अग्निं शिखा स्पर्शवत्"

अर्थः अत्यन्त कठिनं कार्यं।

2. "गङ्गायां घृतं पतितम्"

अर्थः व्यर्थं प्रयासः।

3. "अन्धः परं पश्यति"

अर्थः बाह्यदृष्ट्या अक्षमः अपि सूक्ष्मज्ञानं धारयति।

4. "मृगः जलनिधिं पश्यति"

अर्थः स्वाभाविकं आकर्षणम्।

5. "श्वः कार्यं अद्य कुरु"

अर्थः यत् कार्यं श्वः कर्तव्यम्, तत् अद्य एव कर्तव्यम्।

उपयोगः

एताः लोकोक्तयः एवं मुहावरेः न केवलं जीवनोपदेशाय उपयुक्ताः, अपितु भाषायाः शोभां च वर्धयन्ति।

वंशिका

7अ

संस्कृत पुस्तकमाला कविनाम-सहित

संस्कृतभाषायां बहवः ग्रन्थाः सुप्रसिद्धाः सन्ति। एते ग्रन्थाः केवलं साहित्यं न, अपितु दर्शनं, इतिहासं, नीतिं च प्रकाशयन्ति।
अत्र केचन प्रसिद्धाः संस्कृतपुस्तकाः तेषां कविनाम-सहित प्रदत्ताः

- | | |
|----------------------------|--------------------------|
| 1. महाभारतम् | कविः - महर्षिः वेदव्यासः |
| 2. रामायणम् | कविः - महर्षिः वाल्मीकिः |
| 3. गीता (श्रीमद्भगवद्गीता) | कविः - महर्षिः वेदव्यासः |
| 4. रघुवंशम् | कविः - महाकविः कालिदासः |
| 5. मेघदूतम् | कविः - महाकविः कालिदासः |
| 6. कुमारसंभवम् | कविः - महाकविः कालिदासः |
| 7. हितोपदेशः | कविः - नारायणः |
| 8. पञ्चतन्त्र | कविः - विष्णुशर्मा |
| 9. अभिज्ञानशाकुन्तलम् | कविः - महाकविः कालिदासः |
| 10. शिशुपालवधम् | कविः - माघः |
| 11. किरातार्जुनीयम् | कविः - भारविः |
| 12. नैषधीयचरितम् | कविः - श्रीहर्षः |
| 13. गद्यचन्द्रिका | कविः - विश्वनाथः |
| 14. बुद्धचरितम् | कविः - अश्वघोषः |
| 15. चरकसंहिता | कविः - चरकः |
| 16. सिद्धान्तशिरोमणिः | कविः - भास्कराचार्यः |
| 17. अष्टाङ्गहृदयम् | कविः - वाग्भटः |
| 18. मनुस्मृतिः | कविः - महर्षिः मनुः |
| 19. नाट्यशास्त्रम् | कविः - भरतमुनिः |
| 20. आर्यासप्तशती | कविः - गोवर्धनाचार्यः |

सारिका

संस्कृतं च संगणकः (कंप्यूटरः)

संस्कृतं केवलं प्राचीनं भाषा न, अपितु आधुनिककाले अपि अत्यन्तं उपयोगी अस्ति। संगणकविज्ञाने संस्कृतभाषायाः विशेषः स्थानं विद्यते। संस्कृतं सरला, संरचितम्, च वैज्ञानिकभाषा अस्ति।

संस्कृतभाषायाः व्याकरणं पाणिनिना प्रतिपादितं, यत् संगणकविज्ञानाय अत्यन्तं उपयुक्तं भवति। पाणिनीयव्याकरणस्य सूत्राणि अत्यल्पाक्षररूपेण अपि व्यापकं अर्थं प्रकटयन्ति। संगणकस्य कृत्रिमबुद्ध्यां (Artificial Intelligence) संस्कृतं प्रयोगाय उपयुक्तं भवति।

किञ्चित् विशेषतः, संगणके डेटा संरचनायाम् संस्कृतभाषायाः व्याकरणरचना सहायकः भवति। यतः संस्कृतं संगणकभाषासु सुलभं अनुवादाय च उपयुक्तम्। भारतस्य अनेकाः संस्थाः संस्कृतं संगणकविज्ञानस्य क्षेत्रे अध्ययनं कुर्वन्ति।

अतः संस्कृतं केवलं प्राचीनं भाषा न, अपि तु भविष्ये अपि विज्ञानं, संगणकं च प्रेरयितुं समर्थं भवति। तस्मात्, संस्कृतस्य अध्ययनं संरक्षणं च आधुनिककाले अतीव आवश्यकम्।

पंकज कुमार

6

7ब

कृत्रिमबुद्धिः एवं संस्कृतम्

कृत्रिमबुद्धिः (Artificial Intelligence) आधुनिककाले विज्ञानस्य प्रमुखं क्षेत्रं वर्तते। एषा विद्या मानवबुद्धेः अनुकरणं कृत्वा कार्यं कुर्वन्, जीवनं सुलभं करोति। अत्र संस्कृतभाषायाः महत्त्वं विशेषरूपेण प्रकाशते।

संस्कृतं संरचितं, सरलं च भाषा अस्ति, यत् कृत्रिमबुद्ध्यां (AI) उपयोगाय अतीव उपयुक्तं भवति। पाणिनीयव्याकरणं, यद्विश्वस्य प्राचीनतमं वैज्ञानिकव्याकरणं अस्ति, कृत्रिमबुद्धेः संगणकस्य च विश्लेषणाय आधाररूपेण स्वीकृतं। संस्कृतस्य व्याकरणं निश्चितं तथा यथारूपं अस्ति, यः संगणकदृष्ट्या डेटा-प्रोसेसिंगे उपयुक्तं भवति।

कृत्रिमबुद्धेः विविधेषु उपयोगेषु, यथा भाषा-परिवर्तने (Language Translation), भाषाप्रक्रियायां (Natural Language Processing), तर्के च संस्कृतं श्रेष्ठं साधनं भवति। अनेकाः वैज्ञानिकाः संस्कृतस्य व्याकरणं तथा संरचनाम् अनुसंधानं कुर्वन्ति, कृत्रिमबुद्ध्यां संस्कृतं प्रभावी साधनं भविष्यति।

अतः कृत्रिमबुद्धेः क्षेत्रे संस्कृतं केवलं पुरातनं भाषा न, अपितु भविष्ये अपि मानवजीवनं सुगमं कर्तुं समर्थं वैज्ञानिकं साधनं भवति।

कृत्रिमबुद्धिः (Artificial Intelligence) आधुनिकयुगस्य महानं आविष्कारः अस्ति। एषा विद्या मानवबुद्धेः अनुकरणं कृत्वा कार्यं कुर्वन्, जीवनं सुलभं करोति। भाषाप्रक्रियायां (Natural Language Processing), यन्त्र-अध्ययनं (Machine Learning), तथा तर्कविचारं (Logical Reasoning) कृत्रिमबुद्धिः मुख्यं भूमिकां निर्वहति। एषु सर्वेषु क्षेत्रेषु संस्कृतभाषायाः योगदानं अतीव महत्वपूर्णं वर्तते।

संस्कृतं संरचनात्मकं, नियमबद्धं च भाषा अस्ति। पाणिनीयव्याकरणं, यत् विश्वस्य प्राचीनतमं वैज्ञानिकं व्याकरणं अस्ति, कृत्रिमबुद्ध्यां अनुसंधानाय आधाररूपेण स्वीकृतम्। संस्कृतस्य व्याकरणं निश्चितं तथा स्पष्टं भवति, यः कृत्रिमबुद्धेः

संगणकदृष्ट्या डेटा-प्रोसेसिंगे, भाषासंविधानं (Language Modelling), तथा यन्त्र-अनुवादे (Machine Translation) विशेषतः उपयुक्तं अस्ति।

संस्कृतभाषायाः स्वरूपं तथा संरचना संगणकविज्ञानाय अतीव अनुकूलं वर्तते। कृत्रिमबुद्धौ भाषाप्रसंस्करणस्य (NLP) क्षेत्रे संस्कृतं सुगमं च विश्लेषणं कर्तुं समर्था अस्ति। उदाहरणतः, संस्कृतं "निःसंदिग्धभाषा" (Unambiguous Language) अस्ति। अतः कृत्रिमबुद्धेः प्रणालीभिः (AI Systems) तस्याः व्याकरणस्य तथा शब्दार्थानां प्रक्रिया सुगमं भवति।

भारते विविधाः संस्थाः, यथा भारतीयप्रौद्योगिकीसंस्थानानि (IIT), कृत्रिमबुद्धेः क्षेत्रे संस्कृतं अधिकृत्य शोधकार्यं कुर्वन्ति। उदाहरणार्थं, संस्कृतस्य उपयोगेन यन्त्र-अनुवादकाः, ज्ञानसंग्रहः (Knowledge Representation), तथा स्वचालितप्रणालीनिर्माणं कर्तुं प्रयत्नाः प्रचलन्ति।

संस्कृतं केवलं प्राचीनं भाषा न, अपितु कृत्रिमबुद्धेः विकासे भविष्यस्य आधारस्तम्भः भवितुमर्हति। तस्मात्, संस्कृतस्य अध्ययनं, संरक्षणं, च प्रचारं केवलं सांस्कृतिकदृष्ट्या न, अपि तु वैज्ञानिकदृष्ट्या अपि अतीव आवश्यकं अस्ति। कृत्रिमबुद्धिः संस्कृतभाषायाः वैज्ञानिकमहत्त्वं प्रदर्शयति।

रणबीरसिंहः

प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक

आधुनिकविद्यालयं गुरुकुलव्यवस्थां च

आधुनिककाले शिक्षायाः प्रणाली गुरुकुलव्यवस्थायाः भिन्ना दृश्यते। गुरुकुले प्राचीनभारतीयशिक्षाव्यवस्था, या आचार्येण सह विद्यार्थिनः निवासं कृत्वा, ज्ञानं, मूल्यं, धर्मं च शिक्षन्ते। आधुनिकविद्यालयेऽपि शिक्षायाः महत्त्वं तु दृश्यते, किन्तु तत्र मूल्यशिक्षायाः अभावः स्पष्टं दृश्यते।

गुरुकुलव्यवस्थायाम् शिक्षायाः मुख्यं लक्ष्यं आचार-विचारं, आत्मसंयमं, तथा आध्यात्मिकज्ञानं आसीत्। तत्र विद्यार्थी जीवनोपयोगिनं सर्वं ज्ञानं प्रत्यक्षानुभवेन प्राप्नोत्। यथा योगः, वेदः, शास्त्राणि, धनुर्वेदः च। गुरुकुले शिक्षायाः मुख्यं आधारः आचार्यः आसीत्, यः विद्यार्थिनः केवलं पठयति न, अपितु तेषां जीवनं साधयति।

आधुनिकविद्यालयेषु पाठ्यक्रमः विज्ञानं, गणितं, भाषा, समाजज्ञानं च अधिकं बलं ददाति। किन्तु तत्र नैतिकशिक्षायाः, शारीरिकविकासस्य, तथा आध्यात्मिकचिन्तनस्य अभावः भवति। छात्राः परीक्षा-केंद्रिताः शिक्षायाम् अधिकं लीनाः भवन्ति।

उभयोः व्यवस्थयोः तुलना कृत्वा ज्ञायते यत् गुरुकुलव्यवस्था नैतिकशिक्षायाः, व्यक्तित्वविकासस्य च दृष्ट्या श्रेष्ठा आसीत्। किन्तु आधुनिकविद्यालयव्यवस्था आधुनिकविज्ञानं, तन्त्रज्ञानं, तथा व्यावसायिककौशलं शिक्षयति, यत् वर्तमानजगते आवश्यकं भवति।

उपसंहारः

गुरुकुलव्यवस्था च आधुनिकविद्यालयव्यवस्था च परस्परं पूरकं भवेत्। यत्र प्राचीनमूल्यं च, आधुनिकज्ञानं च संयुक्तं शिक्षां प्रदानं कुर्यात्, तत्र उत्तमं शिक्षासंविधानं सम्भवति। तस्मात्, उभयोः तत्त्वं संयोज्य शिक्षासंस्करणं कर्तव्यम्।

अंशु

7अ

पर्यावरणम्

पर्यावरणं प्रकृतेः वरदानम् अस्ति। अस्य महत्त्वं वर्णयितुं शब्दाः अपर्याप्ताः। पर्यावरणं वनानि, नद्याः, पर्वताः, जीवजन्तवः, वायुः, जलं, भूमिः च सर्वं सम्मिलितं भवति। यतः अस्माकं जीवनं पर्यावरणे निर्भरं भवति।

यदि पर्यावरणं शुद्धं च स्वस्थं च भविष्यति तर्हि मानवानां जीवनं सुखदं च निरोगं च भविष्यति। परंतु आधुनिककाले मनुष्यः स्वार्थेन पर्यावरणं नाशयति। वृक्षच्छेदनं, कारखानानां धूमः, प्लास्टिकदोषः च पर्यावरणस्य महद् अनर्थं जनयन्ति।

पर्यावरणस्य संरक्षणं महत्त्वपूर्णं कर्तव्यम्। वृक्षारोपणं, जलसंरक्षणं, प्लास्टिकस्य त्यागः च अस्माभिः कर्तव्यानि। यदि वयं पर्यावरणं रक्षामः तर्हि पृथिव्याः भविष्यं सुरक्षितं भविष्यति।

तस्मात् सर्वे जनाः एकतया पर्यावरणं संरक्षितुं संकल्पं कुर्वन्तु। "प्रकृतेः संरक्षणं लोके सर्वजनस्य धर्मः" इति स्मर्तव्यम्।

पर्यावरणं रक्षतु, पृथिवीं रक्षतु।

1. प्रकृतिः संरक्षणस्य महत्त्वम्
वनं रक्षति रक्षितं, जलं रक्षति रक्षितम्।
भूमिं रक्षति रक्षितां, तस्मात् सर्वं संरक्षयेत्॥

(अर्थः जो वन, जल और भूमि की रक्षा करता है, वही स्वयं सुरक्षित रहता है। अतः हमें सम्पूर्ण प्रकृति की रक्षा करनी चाहिए।)

2. वृक्षारोपण महत्त्वम्
वृक्षाः सन्तु हिता लोके, वर्षं ददतु मेघदाः।
छायां ददतु लोकाय, सुखं जीवतु मानवः॥

(अर्थः वृक्ष लोक के लिए हितकारी हैं, वे वर्षा प्रदान करते हैं, सभी को छाया देते हैं और मनुष्यों को सुखपूर्वक जीने में सहायता करते हैं।)

3. जल संरक्षणम्
अपः सन्तु हिताय नः, जीवनस्य परं धनम्।
तस्मात् संरक्षयेद् वारी, न नश्येद् मानवः पुनः॥

(अर्थः जल हमारे लिए हितकारी है और यह जीवन का सबसे बड़ा धन है। अतः हमें जल का संरक्षण करना चाहिए, ताकि मानव जाति नष्ट न हो।)

अनुष्का

7अ

भारतीय भाषा ग्रीष्मकालीन शिविर





अंतरराष्ट्रीय योग दिवस







राष्ट्रीय खेल दिवस









स्वतंत्रता दिवस







गणतंत्र दिवस



एक भारत श्रेष्ठ भारत











विज्ञान प्रदर्शनी



वायु सेना अग्निशमन सेवा सप्ताह







अंतरराष्ट्रीय नशा निषेध दिवस



हर घर तिरंगा



रंगोली प्रतियोगिता



चित्रकारी कार्यशाला



धन्यवाद